



नरक की आग

एक उलझा हुआ सच

लेखक जो क्रूज़

Copyright © 2013, 2021
by Lu Ann Crews

All rights reserved.
Printed in India.

Published by:
Amazing Facts India
Post Box No 51
Banjara Hills, Hyderabad
Telangana, 500034

www.AmazingFactsIndia.org

नरक की आग

एक उलझा हुआ सच

लेखक जो कूज़

अध्याय-1 क्या और कहाँ नरक है?

बाइबल में सबसे अधिक धार्मिक भ्रमित विषयों में से एक विषय नरक है। यह पादरी द्वारा लांछित किया गया है और जब तक इस शब्द को अश्लीलता और निष्कासन के रूप में जाना जायेगा, तब तक इसे विकृत कर दिया जाता रहेगा। हर स्थान पर लोग एक ही सवाल पूछ रहे हैं, क्या और कहाँ नरक है? दुष्टो का भाग्य क्या है? क्या प्रेम का देव अनन्त काल तक लोगों पर अत्याचार करता रहेगा? क्या नरक की आग पापियों की दुष्टता को जलायेगी?

इन सवालो के जवाब बाइबल में दिये गये हैं। विषय के आस-पास का विवाद हमें सभी सत्य को उजागर करने पर हतोत्साहित करना है, क्योंकि यह मसीह में है। सबसे पहले हमें यह समझने की जरूरत है कि जीतने के लिये एक स्वर्ग है और किनारा करने के लिये नरक। यीशु ने सिखाया कि हर आत्मा या तो बच जायेगी या खो जायेगी। कोई निष्पक्ष जगह नहीं है और कोई दूसरा पुरस्कार नहीं है। "मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेज देगा और वे अपने राज्य से उन सभी चीजों को इकट्ठा करेगे जो अपमान करते हैं और वे जो अधर्म करते हैं और उन्हें आग की भट्टी में डाल देगे, जहाँ रोना और दांतों का पीसना। तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के रूप में चमकेगें। (मत्ती 13:41-43)

इन दो परम नियति को ध्यान में रखते हुये, जो पैदा हुये हैं, हमें कितना जोशीला होना चाहिये सत्य को खोजने के लिये "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ" वह किसी के लिए भी एकमात्र

पूर्ण सुरक्षा है जिसे यीशु ने नरक के बारे में सिखाया था। उनका सिद्धान्त एक मात्र ऐसा है जो पूरी तरह से भरोसेमन्द और सच्चा है। उन्होंने कहा कि कुछ को आग में डाल दिया जायेगा और कुछ राज्य में चमकेगे।

काफी अजीब है, इस विषय पर असत्य का उपदेश देने के साथ कई धर्म गुरुओं द्वारा यीशु पर कई धार्मिक नेताओं द्वारा आरोप लगाये गये हैं। उन्होंने उसे सिखाने का आरोप लगाया है कि एक अमर आत्मा मृत्यु के समय शरीर से या स्वर्ग या नरक में चली जाती है। यह वह नहीं है जो यीशु ने सिखाया था। उन्होंने कभी भी यह जानकारी नहीं दी कि मृत्यु के समय कुछ असन्तुष्ट आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। निश्चित रूप से, उन्होंने कभी यह आभास नहीं किया कि दुष्ट लोग मरते ही अनन्त पीड़ा झेलते हैं।

अब आइये एक नमूना प्राप्त करें कि यीशु ने वास्तव में नरक के विषय में क्या सिखाया था। "और अगर तेरा हाथ तुझे नुकसान पहुँचाये तो उसे काट दो, नरक में जाने के लिये दो हाथ के बजाय तुम्हारे लिये अपंग प्रवेश करना बेहतर है" (मरकुस 9:43) मास्टर के ये शब्द किसी भी संदेह की छाया से परे साबित होते हैं कि यह शरीर है जो आग में चला जाता है, न कि कुछ रहस्यमय आत्मा। (मत्ती 5:30) "उन्होंने पूरे शरीर" की बात की। नरक में डाला जा रहा है। इसका अर्थ है हाथ, पैर, आंखों और भौतिक शरीर के अन्य सभी सदस्य।

मसीह के सिद्धान्त के विपरीत, आधुनिक मंच काल्पनिक आत्माओं के नाटकीय चित्रण के साथ गूँजते हैं, जो शरीर को

मृत्यु पर छोड़ देते हैं, ऐसी आत्माएँ जिनके पास न तो पदार्थ होता है और न ही आकार। यह दृश्य, हालांकि लोकप्रिय हो सकता है, यीशु ने जो सिखाया उससे पूरी तरह विपरीत है। इसे अच्छी तरह से चिन्हित करें, क्योंकि महान मास्टर शिक्षक ने इसे बार-बार सुसमाचारों में लिखा था-जो लोग नरक की आग में डाले जायेंगे, वे हाथो, पैरो, आंखो और शरीर को सभी भौतिक विशेषताओं के साथ वहाँ जायेंगे। वे निराकार आत्मा या आत्मा के कुछ स्वर्गिक अवस्था में नहीं जायेंगे।

अब हम बाईबल से चार महान तथ्यों की जांच करने के लिये तैयार हैं जो दुष्टों के भाग्य के बारे में पूछे गये अधिकांश सवालों पर रोशनी डालेंगे।

अध्याय-2 निर्णय के पश्चात सजा

नरक के विषय में पहला महत्वपूर्ण तथ्य है कि अरक्षित व्यक्ति के मरने के पश्चात वह किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के स्थान पर नहीं जाते हैं, लेकिन कब्र में सजा के दिन तक आरक्षित रहते हैं। मसीह ने स्पष्ट रूप से गेहूँ और जंगली घास के प्रसिद्ध दृष्टान्त में इस सच्चाई को सिखाया। जब गृह स्वामी ने खेत में गेहूँ बोया था, तब उसके नौकर ने रिपोर्ट दी कि अनाज के बीच में जंगली घास बढ़ रहे थे। उनका सवाल था कि क्या उन्हें अभी उखाड़ फेंकना चाहिये जब वो बहुत छोटे हैं। गृह स्वामी का उत्तर था, "नहीं, ऐसा न हो कि जब तुम जंगली घासों को निकालों तो उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ दो। दोनो को

फसल आने तक एक साथ बढ़ने दो, और फसल के समय में मैं कटाई करने वालों से कहूंगा, पहले कांटो को इकट्ठा करो और उन्हें जलाने के लिये बंडलों में बांध लो, लेकिन गेहूँ को मेरे खालिहान में इकट्ठा करो।" (मत्ती 13:29, 30)

अब मसीह के शब्दों का पालन करें, क्योंकि वह दृष्टान्त का अर्थ समझाता है, "जो अच्छा बीज बोता है वह मनुष्य का पुत्र है, खेत संसार है, अच्छा बीज परमेश्वर के राज्य के बच्चे हैं लेकिन कांटे दुष्टों के बच्चे हैं, दुश्मन जिसने उन्हें बोया था वो शैतान है, फसल दुनिया का अन्त है, और फसल काटने वाले स्वर्गदूत है। इसलिये कांटो को इकट्ठा कर आग में जलाया जाता है, इसलिये यह दुनिया के अन्त में होगा। मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेज देगा, और वे अपने राज्य से उन सभी चीजों को इकट्ठा करेगे जो अपमान करते हैं और जो अधर्म करते है, और उन्हें आग की भट्टी में डाल दिया जायेगा, और वहाँ पर दांतो का किटकिटाना और रोना होगा। (मत्ती 13:3-43)

यीशु ने जो कहा, उस पर विस्तार करके कोई भी दृष्टान्त सरल नहीं हो सकता। यह इतना स्पष्ट है कि बच्चा भी इसे समझ सकता है। उसने कहा- जंगली घास दुष्टों को दर्शाता है जिन्हें आग में डाल दिया जायेगा, "दुनिया के अन्त में"। यह फसल में था कि अलगाव हो जायेगा, और उसने स्पष्ट रूप से कहा, "फसल दुनिया का अन्त" है। कोई भी मसीह के इन शब्दों को गलत कैसे कह सकता है? मृत्यु के समय आग में जाने वाले दुष्टों का पूरा विचार हमारे ईश्वर के विशिष्ट शिक्षण का खंडन करता है कि उन्हें दुनिया के अन्त में आग में डाल दिया जायेगा।

चूंकि फैसला मसीह के आने के बाद ही होगा इसलिये हम देख सकते हैं कि किसी को भी पहले दंडित करना कितना असंभव होगा।

उस समय न्याय की मांग होगी कि एक व्यक्ति को सजा सुनाये जाने से पहले न्याय के लिये लाया जाए। पतरस ने घोषणा की, "ईश्वर जानता है कि धर्मियों को परीक्षाओं से कैसे निकाला जाये और सजा के दिन अन्यायियों को दंडित किया जाये।" (2 पतरस 2:9) यह निश्चित रूप से समझ में आता है, है ना? मान लीजिये कि एक आदमी को चोरी के आरोप में अदालत में लाया जाये, और न्यायाधीश उनसे कहा, "उसे दस साल के लिये जेल में डाल दो" फिर उसके केस की सुनवाई करेगे" सुना एक मानव न्यायाधीश भी ऐसा अन्याय नहीं होने देगा। ऐसी कार्रवाई के लिये उस पर महाभियोग लगाया जायेगा। निश्चित रूप से ईश्वर ऐसे फरेब के लिये दोषी नहीं होगा।

अगर हम बाइबल के मतलब में बताते हैं कि इस बिन्दु पर कोई सन्देह नहीं हो सकता है कि दुष्ट "आरक्षित" कब तक है? "निर्णय के दिन" तक। क्या होना है? "सजा दिये जाने के लिये।" इसका मतलब है कि उन्हें उस फैसले के दिन तक सजा नहीं दी जा सकती है। क्या बाइबल बताती है कि वे कहाँ आरक्षित हैं। यीशु ने स्वयं कहा, "इस पर चकित न हो, क्योंकि वो समय आ रहा है, जो कब्रों में हैं उसकी आवाज सुनेगे और वो बाहर आयेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे। (यहून्ना 5:28,29) कितना सरल यीशु ने कहा

कि अच्छा और बुरा दोनो ही। जीवन या लानत प्राप्त करने के लिये अपनी कब्रों से बाहर आयेंगे। यह साबित करता है कि मृत्यु के समय से जब वे पुनरूत्थान में नहीं आते हैं, तब तक उन्हें कोई पुरस्कार या सजा नहीं मिलेगी। यह सब उनके लिये यीशु के आने के बाद होता है। वे उस दिन तक आरक्षित रहते हैं। पतरस ने संकेत दिया, लेकिन मसीह ने बताया कि वे कहाँ आरक्षित होंगे- कब्रों में।"

यदि स्पष्ट शब्दों की आवश्यकता है, तो यीशु ने लूका 14:14 में कहा, "पुनरूत्थान पर इनाम दिया जाना चाहिये या उसे फिर मत्ती 16:27 में "क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आयेगा, और फिर वह अपने कार्यों के अनुसार हर आदमी को पुरस्कृत करेगा। जब "कब" है? जब वह अपने स्वर्गदूतों के साथ आता है, उसके पुनरूत्थान तक कोई भी इनाम या सम्मान नहीं दिया जायेगा है। ये आयते विवाद से परे हैं। उनके संदर्भ में लिया गया, उनमें कोई अस्पष्टता या छिपा हुआ अर्थ नहीं है।

फिर से मसीह को बाइबल के अंतिम अध्याय में उद्धृत किया गया है, "और देखो, मैं जल्दी आता हूँ और अपने साथ तुम्हारे लिए प्रतिफल ला रहा हूँ। जिसने जैसे कर्म किये हैं, मैं उन्हें उसके अनुसार ही दूँगा। (प्रकाशितावाक्य 22:12)। यहाँ वह हमें याद दिलाता है कि "हर आदमी", हर व्यक्ति जब मसीह को इस धरती पर आते देखेगा, तब उसे उसका उचित इनाम मिलेगा। अय्यूब घोषणा करता है कि दुष्ट आरक्षित है, विनाश के दिन तक, उन्हें क्रोध के दिन सामने लाया जायेगा।

"दानिय्येल ने लिखा है कि वे "जो" पृथ्वी की धूल में सोते हैं, वे जागेंगे, कुछ सदा के जीवन के लिये, और कितने अपने नाम धराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये। (दानिय्येल 12:2)

क्या कोई शक हो सकता है कि पुनरूत्थान, निर्णय और सजा का सामना करने से पहले दुष्टों को कहाँ रखा गया है? हमारे पास पतरस, दानिय्येल, अय्यूब और मास्टर स्वयं गवाह हैं। वक्रोक्ति के लिये कोई जगह नहीं है। वे कब्र में आरक्षित हैं।

अब हम नरक के विषय में दूसरे महान तथ्य पर आते हैं, दुनिया के अन्त में यीशु के दूसरे आगमन के बाद तक कोई भी असंरक्षित व्यक्ति नरक की आग में नहीं डाला जायेगा। हालांकि हम पहले ही इस बिन्दु पर पर्याप्त सबूत देख चुके हैं, आइये अब और भी अधिक देखे। दुष्टों की सजा के विषय में बताते हुये यहून्ना ने लिखा, "लेकिन भयभीत और अविश्वासी, और घृणित और हत्यारों और वैश्यावृत्ति और जादूगरों, और मूर्तिपूजकों और सभी झूठों में उनका हिस्सा होगा। वो झील जो आगे और गंधक से जलती है, वही दूसरी मृत्यु है। (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

अध्याय-3

पुनरूत्थान से पहले दूसरी मृत्यु नहीं

यहाँ खोये हुये लोगों को उनके पापों की सजा भुगतते हुये नरक की आग में चित्रित किया जाता है, और वह सजा क्या है? "दूसरी मृत्यु" यहून्ना कहते हैं। क्या आपको एहसास है कि यह दुष्टों

के विषय में क्या साबित करता है? यह साबित होता है कि पुनरूत्थान होने तक वे आग की झील में नहीं डाले जायेंगे। इन लोगो की आग में दूसरी मौत होगी, लेकिन जब तक उन्हें दूसरी जिन्दगी नहीं मिलती तब तक वे दूसरी मौत नहीं झेल सकते। उन्होंने इस दुनिया में पहला जीवन जिया और कब्र में जाते हुये पहली मौत मर गये। इससे पहले कि वे एक दूसरी मौत मर सकते हैं उन्हें पुर्नजीवित किया जायेगा। यह निश्चित रूप से बताता है कि दुनिया के अन्त में क्या होने वाला है। यीशु ने कहा, "जो कब्रों में है वे सब सामने आ जायेंगे।"

अब पुनरूत्थान में वह दूसरा जीवन पाने के बाद, दुष्टों को उनके पापों के लिये नरक की अग्नि से दंडित किया जायेगा। "जो कि दूसरी मृत्यु हैं"।

इस प्रकार दूसरी मृत्यु अंतिम और अनंत मृत्यु है जहाँ से पुनरूत्थान नहीं होगा। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि "इस नरक की अग्नि दंड" का समय दुनिया के अन्त में पुनरूत्थान के बाद है। यह पहली मृत्यु के समय नहीं होता है जिस प्रकार लोगो ने इस तथ्य पर विश्वास किया है।

क्या बाइबल बताती है कि दुष्टों को आग की झील में कैसे डाला जायेगा? हाँ, ये बताती है। यहून्ना सहस्रावादी के करीब होने वाली नाटकीय घटनाओं का वर्णन करता है। "और जब हजार वर्ष की अवधि समाप्त हो जाती है, तो शैतान को उसकी जेल से बाहर कर दिया जायेगा, और उन राष्ट्रो को धोखा देने के लिये बाहर निकाला जायेगा, जो पृथ्वी के चार तिमाहियों में है, गोग और मागोग, वह उन्हें लड़ाई के लिये इकट्ठा करेगा जिनकी संख्या समुद्र की रेत के रूप में होगा।

और वे सारी पृथ्वी पर फैलकर सतों के शिविर को चारों ओर से घेर लेंगे और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म कर देगी। (प्रकाशितवाक्य 20:7-9)।

यहाँ सहस्राब्दी के अन्त में सभी दुष्ट लोग जो कभी जीवित रहे हैं, दूसरे पुनरूत्थान में आगे आयेगे। उपरान्त ये वर्णन करते हुये कि कैसे धर्मी जीवन में आयेगे और हजार वर्षों के दौरान मसीह के साथ शासन करेंगे, यहून्ना ने लिखा "लेकिन मृत हजार साल पूरे होने तक फिर से जीवित नहीं रहे" (प्रकाशितवाक्य 20:5)।

निश्चित रूप से शेष मृतकों को दुष्ट होना पड़ा और उनके पुनरूत्थान से शैतान को परमेश्वर और संतो के खिलाफ निरंतर लड़ाई का अवसर मिलेगा। वह उन खोये हुये लोगो के मेजबान को इकट्ठा करने के लिये निकलता है, जिन्हें मृतकों से उठाया गया है। उसके पास एक बार फिर से लोगों को धोखा देने के लिये मौका है, और वह उन्हें विश्वास दिलाता है कि वे नये येरूशलेम के खिलाफ प्रबल हो सकते हैं जो परमेश्वर के स्वर्ग से बाहर आये है। (प्रकाशितवाक्य 21:21) जब वे उस ओर जाते हैं और शहर को घेर लेते हैं तो स्वर्ग से आने वाली भीषण आग से दुष्टों को अचानक अलग कर दिया जाता है। यह नरक की अग्नि है जो पाप की अंतिम सजा है।

अध्याय-4 नरक का स्थान

बाइबल स्पष्ट रूप से दावा करती है कि यह आग दुष्टों को "पृथ्वी की चौड़ाई" पर यही गिराती है। प्रत्येक बाइबल लेखक जो नरक के विषय पर बोलता है, दुष्टों की इस दूसरी मृत्यु पर नई अंतर्दृष्टि जोड़ता है। पतरस कहता है, "लेकिन आकाश और पृथ्वी जिनको अब तक सुरक्षित रखा गया है, न्याय के दिन और अधर्मी पुरुषों के तिरस्कार के खिलाफ आग में रखा जायेगा" (पतरस 3:7)। फिर वह प्रभु के उस दिन का वर्णन करता है जो बहुत ही भयंकर गर्मी से पिघल जायेगा। पतरस की भाषा अधर्मी के लिये सजा के स्थान के विषय में बहुत स्पष्ट है। वह कहता है कि यह पृथ्वी उस आग के लिये आरक्षित है जो दुष्टों के लिये न्याय और सत्यानाश लायेगी। उनकी सजा इस पृथ्वी में होगी। यशायाह ने घोषणा की "यह यहोवा के प्रतिशोध का दिन है और सिय्योन का मुकदमा चुकाने का एक वर्ष नियुक्त है। और ऐदोम की नदियाँ राल में और उसकी मिट्टी गन्धक में बदल जायेगी उसकी भूमि जलती हुई राल बन जायेगी। (यशायाह 34:8,9)।

भविष्यवक्ता पूरे ग्रह को नष्ट होने वाली आग में चित्रित करता है। यहाँ तक कि धाराये और धूल पिच और गंधक के विस्फोटक में बदल जाती है। यशायाह कहता है कि वह ईश्वर का प्रतिशोध है और विवाद के अन्त में पुरस्कार।

दाऊद अपनी गवाही में ये शब्द जोड़ता है, "वह दुष्टों पर फन्दे बरसायेगा, आग और गन्धक और प्रचण्ड लहू उनके कटोरे में बांट दी जायेगी"। (भजन संहिता 11:6) ध्यान दे कि वह यूहन्ना

और पतरस के द्वारा दुष्टों के भाग्य के लिए वर्णित वही शब्दों का उपयोग करता है। सभी सजा के स्थान (पृथ्वी) और सजा के ऐजेंट (आग) के रूप में सहमत हैं।

यह हमें नरक के विषय में तीसरे महान तथ्य की ओर ले जाता है। नरक की जगह के रूप में नरक पृथ्वी प्रलय के दिन एक झील में बदल जायेगी। हालांकि यह खोये हुये लोगों के भाग्य के बारे में कुछ अन्य बहुत ही दिलचस्प सवाल भी उठाता है। सबसे पेचीदा और गूढ़ सवाल है सजा का समय कितना लम्बा होगा है। दुष्ट कब तक जीते रहेंगे और उस आग में तड़पते रहेंगे?

कोई भी व्यक्ति उस प्रश्न का स्टीक उत्तर नहीं दे सकता, क्योंकि बाइबल कहती है कि उन्हें उनके कार्यों के अनुसार दंडित किया जायेगा। इसका मतलब है कि सजा की डिग्री होगी। कुछ दूसरों की तुलना में लम्बे समय तक पीड़ित होंगे। लेकिन एक बात हम निश्चितता के साथ कह सकते हैं- दुष्ट अनन्त काल तक उस आग में नहीं रहेंगे।

अध्याय-5 नरक की अग्नि अंतहीन नहीं

इस बिन्दु पर इतना सुनिश्चित होने के कई कारण हैं। पहला, इस पृथ्वी को धर्मियों के लिये अंतिम घर घोषित किया गया है। यीशु ने कहा, "धन्य है वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे उत्तराधिकारी होंगे। (मत्ती 5:5)। पतरस ने इस पृथ्वी का वर्णन करने और एक महान विस्फोट शोर के साथ जलने के बाद; एक नई पृथ्वी को धार्मिकता

से भरा हुआ देखा है। फिर भी, हम उसके वादे के अनुसार देखते हैं। नया आकाश और एक नई धरती, जिसमें धार्मिकता निहित है। (2 पतरस 3:13)

दुष्ट इस ग्रह में रहना जारी नहीं कर सकता क्योंकि इसका विशेष रूप से वादा किया गया है। अपनी संपूर्णता में अब्राहम के आध्यात्मिक बीज (रोमियों 4:13) के लिये। इसे पाप के सभी अभिशापों से मुक्त किया जा रहा है, यह पहले प्रभुत्व और इसके लिये ईश्वर की मूल योजना पर वापिस आ जायेगा। यह अन्त में होगा कि ईश्वर ने ईरादा किया है- एक आदर्श लोगो के लिये एक दम सही घर।

दूसरे स्थान पर दुष्ट इस धरा पर रहना जारी नहीं रख सकते, क्योंकि उन्होंने कभी भी सनातन जीवन के लिये मसीह पर भरोसा नहीं किया। यह केवल धर्मी है जो अनन्त जीवन का उपहार प्राप्त करता है। "ईश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपने इकलौते बेटे को दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वो नाश न हो, (यहून्ना 3:16)। लेकिन उन लोगो के विषय में क्या, जो उसपर विश्वास नहीं करते? वे निश्चित रूप से नष्ट हो जायेगे। बाइबल कहती है पाप की मजदूरी मृत्यु है।" (रोमियों 6:25)

कृपया इन छंदो में इंगित सादगी के विषय में न सोचे। दुष्टों से कभी जीवन का वादा नहीं किया जाता है। उन्हें मृत्यु का वादा दिया जाता है- अनन्त मृत्यु। केवल धर्मी लोगो से ही जीवन का वादा किया जाता है- अनन्त जीवन।

लेकिन अन्त में बिना जीवन पाने का केवल एक ही तरीका है और वह है यीशु में विश्वास। यहून्ना इसे इस प्रकार से वर्णन करता है, "और ये रिकार्ड है कि ईश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और जीवन उसके पुत्र में है। वह पुत्र को जीवित करता है और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है उसके पास जीवन नहीं है। (1 यहून्ना 5:11, 12)। मुझे आपसे एक प्रश्न करना है, क्या दुष्टों के पास जो आग की झील में है, परमेश्वर का पुत्र है? बेशक नहीं। फिर उनके पास जीवन कैसे हो सकती है? यहून्ना कहते हैं, "ये जानते हुये कि किसी भी हत्यारे के पास अनन्त जीवन नहीं है" (यहून्ना 3:15) क्या नरक की आग में मारे गये लोग अनन्त काल तक जीवन जीते रहेंगे? कभी नहीं।

यह मानना होगा कि यीशु के अलावा किसी अन्य स्रोत से अनन्त जीवन प्राप्त किया जा सकता है। दुष्ट कहाँ मिलेगे? पौलुस ने घोषणा की कि यीशु मसीह "जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाश में लाया" (2 तीमुथियुस 1:10)। बाइबल में दुष्टों पर अमरता का वर्णन है। आप से प्राप्त करने वाले धर्मी के विषय में अकसर पढ़ सकते हैं लेकिन अविश्वासी कभी नहीं।

पौलुस ने कहा, देखो मैं तुम्हे एक रहस्य बताता हूँ। हम सब सोयेंगे नहीं, लेकिन हम सब पल भर में बदल जायेंगे, क्षण-भर में, पलक मारते ही आखिरी तुरही फूंकते ही होगा, क्योंकि तुरही फूंकी जायेगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाये जायेंगे और हम सब बदल जायेंगे। (1 कुरिन्थियों 15:51, 52)

यह पाठ उस समय के एक निश्चित बिन्दु की बात करता है जब धर्मी को तुरन्त अमर प्राणियों में बदल दिया जायेगा। वह समय भविष्य में आयेगा, यह घटित होगा जब यीशु वापस आएगा, जब अंतिम तुरही को ध्वनि पर पुनरूत्थान होता है। बाइबल में कही भी हम दुष्टों के इस प्रकार से बदले जाने के बारे में नहीं पढ़ते हैं। और यह ठीक है क्योंकि वे कभी अनन्त जीवन का यह उपहार प्राप्त नहीं करेंगे और वे आग की झील में रहने में समर्थ हैं।

इस प्रकार की घटना को गढ़ना अकारण और अनुचित है। यह बाइबल के विपरीत है और इन्द्रियों के प्रति घृणास्पद है। यह जेकेल ने घोषणा की, "आत्मा जो पाप करती है, वह मर जायेगी" (यहेजकेल 18:4)। कोई बात नहीं हम एक आत्मा को समझते हैं, चलो एक सरल बाइबल तथ्य को स्वीकार करते हैं कि यह मर सकती है और पाप के कारण मर जायेगी।

यदि दुष्ट आग में अनन्त काल तक जीवित रहते हैं तो उनके पास एक अलग स्थान है जो धामिर्या को छोड़कर है। कौन उन्हें शाश्वत जीवन दे सकता है केवल मसीह। यहून्ना 3:16 इस मुद्दे को इतनी स्पष्ट और सरलता से सुलझाता है। जो एक मात्र इकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं करते वे नाश हो जायेगे, और मर जायेगे। वे दूसरी मौत मरेगे- एक शाश्वत मृत्यु का फंदा जिसे वे कभी नहीं उठाये जायेंगे। वह मृत्यु कभी समाप्त नहीं होगी। यह एक अन्तहीन, शाश्वत दंड है, क्योंकि यह एक अंतहीन, अनन्त मृत्यु है।

अध्याय-6 चिरस्थायी अग्नि

कोई इस सवाल को उठा सकता है, दुष्टों को जलाने वाली चिरस्थायी आग का क्या? इसका मतलब यह नहीं है कि ये कभी नहीं बुझेगी? बेशक यह नहीं है। बुझाने का मतलब बुझाने या बाहर रखना है। कोई भी नरक की आग को बुझाने में सक्षम नहीं होगा। वह ईश्वर का विचित्र अग्नि पहिया है। कोई भी इसे बुझाकर भाग नहीं सकता।

यशायाह उस आग के विषय में कहता है, देख वे तूठ के समान हो जायेगे, आग उन्हें जला देगी। वे स्वयं को ज्वाला की शक्ति से नहीं बुझायेगें, न तो गर्म करने के लिये कोयला होगा, न ही बैठने के लिये आग। (यशायाह 47:14) इसके नष्ट होने का काम पूरा होने के बाद, यह आग बुझ जायेगी। कोई भी स्वयं को इससे खुद को नहीं छुड़ा सकता। लेकिन अन्त में एक कोयला भी नहीं छोड़ा जायेगा। शास्त्र यही बताता है।

यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि येरूशेलेम उस अग्नि से जलेगा जिसे बुझाया नहीं जा सकता है। (यिर्मयाह 17:27) लेकिन वह जलकर खाक हो जायेगा (2 इतिहास 36:19-21)। इन पदों को पढ़े और देखे कि बाबइबल कैसे शब्द "बुझाने" का उपयोग करती है। इसका मतलब केवल यह नहीं है कि यह "बुझाने" का उपयोग करती है। आग जो कभी नहीं बुझेगी। इसका मतलब केवल यह है कि एक "अदमनीय" है। इसे बुझाया नहीं जा सकता।

हम "अनन्त" और "शाश्वत" भावों के बारे में क्या कह सकते हैं जिसका उपयोग नरक की आग का वर्णन करने के लिए किया जाता है? जब हम बाइबल के शब्दों की परिभाषा की आपूर्ति करने की अनुमति देते हैं तो कोई भ्रम या विरोधाभास नहीं है। कई लोग अपने प्राचीन संदर्भ, उन बाइबल के बचनों को आधुनिक परिभाषाओं को लागू करने की गलती करते हैं। यह व्याख्या के सबसे मौलिक नियमों में से एक का उल्लंघन करता है।

तथ्य यह है कि शाश्वत आग का मतलब आग नहीं है जो कभी नहीं बुझाई जायेगी। सदोम और अमोरा के विनाश के विषय में यहूदा 7 में उसी अभिव्यक्ति का उपयोग किया जाता है। "यहाँ तक कि सदोम और अमोरा के रूप में, और उनके बारे में शहरों को इस तरह से, खुद को व्यभिचार को खत्म करने और अजीब आत्मा में जाने के लिये, एक उदाहरण के रूप में तय किया गया है, अनन्त आग का प्रतिशोध चलता रहेगा।"

यह स्पष्ट है कि सदोम आज भी नहीं जल रहा है, मृत सागर उस जगह पर है जहां एक बार वे प्राचीन शहर पर खड़े थे। फिर भी, वे "अनन्त आग" से जल गये, और कहा जाता है कि यह किसी चीज का उदाहरण था। क्या यह एक उदाहरण है? "और सदोम और अमोरा के नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया गया कि उन्हें भस्म करके राख में बदल दिया गया ताकि वे आने वाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये दृष्टान्त बने।" (2 पतरस 2:67)

वह रहा, वह अनन्त आग ने सदोम को राख में मिला दिया, जो अन्त में दुष्टों के साथ होगा। यदि यह पाठ सत्य है तो उसी प्रकार की आग जिसने सदोम और अमोरा को नष्ट किया, वह भी आग की झील में दुष्टों को जला देगा। वो शाश्वत अग्नि होगी। क्या इसका मतलब यह है कि यह दुष्टों को जलाकर राख कर देगा। बाइबल हां कहती है देखो वो दिन आ रहा है।

जो धधकते भट्टे जैसे जलेगा और सब घंमडी, हॉ और सब जो दुष्टता करते हैं, वह टूठ हो जायेगे। और जब वो आयेगा तो उन्हें भस्म कर देगा, परमेश्वर यहोवा यह कहता है, वह उन्हें न तो जड़ से छोड़ेगा और न शाखाओं से। और वह दुष्टों को गिरायेगा, वह उसके पैरो तले राख हो जायेगे, मैं यहोवा यही करूंगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। (मलाकी 4:1, 3)

किसी भी भाषा का कोई भी शब्द उसे अधिक सशक्त या स्पष्ट नहीं बना सकता था। यह अनन्त अग्नि अनन्त काल तक जलती रहती है। यहाँ तक कि जड़, शैतान भी आखिरकार भस्म हो जाता है। पूरी तस्वीर कितनी सुसंगत दिखाई देती है क्योंकि हम बाइबल को पूरी तरह समझाने योग्य है। इन शब्दों के स्पष्ट अर्थ को मिटाने के लिये शब्दों के विचलन की आवश्यकता होगी। फिर भी जो लोग जीवन भर परंपरा के पक्षधर रहे हैं, वे राख हो जायेंगे" फिर भी जोर देकर कहते हैं कि दुष्ट जीवित है और पीड़ित है।

माना जाता है कि इस विषय पर कुछ अस्पष्ट पद हैं, लेकिन हम जान रहे हैं कि इस संदर्भ के विचार करने पर सभी

सामंजस्य बनाते हैं और बाइबल को अपनी टिप्पणी करने की अनुमति है।

मत्ती 25:46 में भी मसीह के शब्द भ्रमित नहीं है जब हम स्पष्ट लेते हैं। जिसका अर्थ है। और ये हमेशा के लिये सजा में चले जाते हैं। लेकिन धर्मी अनन्त जीवन में जायेंगे। "कई लोग अभिव्यक्ति पर परेशान होते हैं, "हमेशा की सजा" क्या बाइबल हमें बताती है कि सजा क्या है?" निश्चित रूप से "पाप की मजदूरी मृत्यु है" (रोमियों 6:23) इसलिये यीशु बस इतना कह रहे थे कि मृत्यु हमेशा के लिये हो जाती है। यह कभी खत्म नहीं होगी, यह पुनरूत्थान से भी नहीं टूटेगी।

पौलुस इन शब्दों के साथ इसे और सरल बनाता है। "आग में जलते हुये उन पर प्रतिशोध लेना जो ईश्वर को नहीं जानते, और यह कि हमारे प्रभु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते हैं, किसे दंड दिया जायेगा?" अब सुनो, पौलुस हमें बताने जा रहा है कि सजा क्या है। "जो प्रभु की उपस्थिति में, और उसकी शक्ति की महिमा से, अनन्त विनाश के साथ उन्हें दंडित किया जायेगा। (2 थिस्सलुनीकियों 1:8,9) इसलिये दंड चिरस्थायी विनाश हैं- एक ऐसा विनाश जो चिरस्थायी हैं। इससे जीवन का कोई पुनरूत्थान या आशा नहीं होगी।

लेकिन उस कीड़े के विषय में क्या जो आहार नहीं करता? बहुतों ने यीशु के विषय में पढ़ा है, जहाँ उन्होंने नरक के लिये कहा है, "जहाँ उनका कीड़ा मरता नहीं है और आग भी नहीं बुझती है" मरकुस 9:45,46 कुछ ने कृमि का आत्मा होने की

व्याख्या की है। क्या यीशु का यही मतलब है? बाइबल में कही भी आत्मा को कृमि के रूप में प्रकट नहीं किया है।

इस उदाहरण में, यीशु ने "गेहन्ना" शब्द का उपयोग "नरक" शब्द के लिये किया। ऐसा हुआ कि गेहना, येरूशेलम की दीवारों के ठीक बाहर जलने का एक वास्तविक स्थान था। इसमें कोई सन्देह नहीं है यीशु के श्रोताओं को गेहन्ना की घाटी से धुंआ निकलते हुये देखा जा सकता है, जहाँ शवों और कचरे को लगातार जलाया जा रहा था। यदि विनाशकारी लपटों के बाहर कुछ भी गिर गया, तो मेगौटस या कीड़े जल्दी से इसे उपभोग करते हैं। उनकी आंखों के सामने पूरी तरह से विलुप्त होने के ज्वलंत दृश्यों के साथ, यीशु ने गेहना आग का उपयोग नरक-अग्नि के पूर्ण विनाश के उदाहरण के रूप में किया। आग क्या बुझाई नहीं गयी थी, और कीड़े लगातार शरीर पर काम कर रहे थे, कुल विनाश की एक तस्वीर।

शायद नरक के बारे में सबसे आसानी से गलत तरीके से लिखा गया पाठ है, "हमेशा के लिये" उठते हुये धुंये के लिये यहून्ना का भ्रम। जो लोग बाइबल में इस वाक्यांश के अन्य उपयोगों से अपरिचित हैं उनके लिये यह वास्तव में बहुत भ्रमित करने वाला हो सकता है। लेकिन पुराने और नये, दोनों नियमों में पदों की तुलना से पता चलता है कि "हमेशा के लिये" शब्द का प्रयोग बाइबल में 57 बार उस वस्तु के संदर्भ में किया जाता है जो पहले ही समाप्त हो चुकी है। दूसरे शब्दों में, "हमेशा के लिये" का अर्थ हमेशा "बिना अन्त" नहीं होता है।

कई उल्लेखनीय उदाहरणों का हवाला दिया जा सकता है, लेकिन दो या तीन उल्लेखनीय हैं। निर्गमन 21 में सेवा नियम कानून के विषय में निर्धारित किये गये हैं। यदि एक सेवक ने अपनी स्वतंत्रता के बजाय अपने स्वामी से प्रेम करना जारी रखा, जब उसे स्वतंत्रता मिलने वाली थी। और उन्होंने वहाँ सदा रहना चाहा, तो उसका कान छेदा जाता था और पवित्र शास्त्र बताता है, "वह अपने मालिक की सेवा सदा करता रहेगा" (पद 6) लेकिन वह नौकर कब तक अपने मानव गुरु की सेवा करेगा? केवल जब तक निश्चित रूप से वह जिन्दा रहता था। तो "हमेशा के लिये" शब्द का अर्थ अन्त के बिना नहीं था।

हन्ना अपने बेटे शमूएल को ईश्वर के मंदिर में ले गयी, जहाँ वह "हमेशा के लिये निवास करेगा।" (1 शमूएल 1:22) परन्तु हम पद 28 में स्पष्ट रूप से देखते हैं, "जब तक वह जीवित रहेगा तब तक वह प्रभु की सेवा में लगा रहेगा। "हमेशा के लिये" शब्द का मूल अर्थ अनिश्चित समय की अवधि को दर्शाता है आमतौर पर, यह समय की अवधि को परिभाषित करता है। कुछ हालात मौजूदा परिस्थितियों में भी जारी रह सकते हैं। यहाँ तक कि योना भी मछली के पेट में, "हमेशा के लिये" बताया गया है। (योना 2:6)

किसी को आपत्ति हो सकती है कि इससे स्वर्ग में धर्मी लोग का जीवन भी सीमित हो सकता है, क्योंकि उन्हें सदा के लिये परमेश्वर की महिमा करने के रूप में वर्णित किया जाता है। बचाये गये और खोये, दोनो के लिये शर्तें समान हैं। लेकिन इसमें शामिल परिस्थितियों में एक जबरदस्त अन्तर है। संतो को

अमरता का वरदान मिला है। उनका जीवन अब ईश्वर के जीवन के साथ मापा जाता है।

अमरता का अर्थ है, "मृत्यु के अधीन नहीं" "हमेशा के लिये" उनके संदर्भ में प्रयुक्त शब्द का अर्थ केवल "बिना अन्त के" हो सकता है, क्योंकि वे पहले ही से अमर विषय है। लेकिन जब "हमेशा के लिये" दुष्टों का वर्णन करने के लिये उपयोग किया जाता है, तो हम नश्वर जीवों के विषय में बात कर रहे हैं, जो मर सकते हैं और उन्हें मरना चाहिये। उनका "हमेशा के लिये" केवल तब तक है जब तक उनकी नश्वर प्रकृति आग में जीवित रह सकती है जो उन्हें उनके कार्यों के अनुसार दंडित करता है।

अध्याय-7 आत्मा और शरीर नष्ट

यह हमें दुष्टों के भाग्य के विषय में अंतिम तथ्य पर लाता है, असंरक्षित होने के बाद अपने पापों के अनुसार दंडित होने पर वे शरीर और आत्मा दोनों के भीतर से बाहर हो जायेंगे। यीशु ने इसे बहुत सरलता से कहा, "और उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं, बल्कि उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट करने में सक्षम हैं। (मत्ती 10:28)

इस कथन के प्रकाश में कोई भी दुष्टों के लिये अमरता का दावा कैसे कर सकता है? यीशु, केवल वही जो जीवन का उपहार दे सकता है, इस संभावना को अस्वीकार करता है कि

नरक में रहने वाले किसी भी रूप में जीवित रह सकते हैं। अनन्त काल के लिये जीवन सूंघ लिया जायेगा, और शरीर को आग की लपटों में विलीन कर दिया जायेगा।

भजनकार ने लिखा "लेकिन दुष्ट लोग नष्ट होंगे और यहोवा के शत्रु मेघों की चर्बी के समान होंगे। वे भस्म कर दिये जायेंगे और धुँएँ में बदल जायेंगे (भजन संहिता 37:20) अभी थोड़ी देर के लिये, और दुष्ट नहीं होगा, हाँ तुम उसकी जगह पर विचार करो, और वह नहीं होगी।" (पद 10)

मानव भाषा में सबसे शक्तिशाली, निश्चित शब्द का उपयोग नरक में विनाश का वर्णन करने के लिये किया जाता है, लेकिन लोग अभी भी जोर देते हैं कि लेखकों को वास्तव में वो नहीं मानते जो वो कहते हैं, जैसे "विनाश" "खत्म होना", "जलना", "भक्षण", मृत्यु क्या इन शब्दों के बाइबल में कुछ रहस्यमयी विपरीत अर्थ है? क्या इन शब्दों के बाइबल में कुछ रहस्यमय विपरीत अर्थ है।

अन्य पुस्तकों में उनकी तुलना में क्या है? हमारे पास ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है। तथ्य यह है कि धर्मशास्त्र ने हमारे महान प्रेम के ईश्वर को बाहर कर दिया है। उसे हिटलर की तुलना में क्रूरता दिखाने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। भले ही हिटलर ने लोगों पर अत्याचार किया और उनके साथ प्रयोग किया, अन्त में उसने उन्हें मरने की अनुमति दी। लेकिन ईश्वर इन अमर आत्माओं को अनन्त काल तक देखते रहने और चीखने के उद्देश्य से जीवित रखेगा, इसलिये ब्रह्मज्ञानी दावा करते हैं।

अध्याय-8

परमेश्वर का न्याय न्यायसंगत है

न केवल ईश्वर के प्रेम की ऐसी तस्वीर गलत है यह उनके न्याय को भी बिगाड़ता है। एक ऐसे सिद्धान्त के बारे में एक पल के लिये सोचिये जो मृत्यु के समय हर खोई हुई आत्मा को तत्काल, कभी न खत्म होने वाले नरक में संजो देगा। मान लीजिये कि 5000 वर्ष पहले एक आदमी की मृत्यु उसके जीवन में एक पोषित पाप के साथ हुई। उसकी आत्मा अनन्त काल के लिये तड़पती हुई आग में तुरन्त चली जायगी। फिर एक और मौत की तस्वीर ऐडोल्फ हिटलर की, जिसने लाखों लोगों की मौत की निगरानी की। लोकप्रिय सिद्धान्त के अनुसार, उनकी आत्मा भी तुरन्त प्रवेश कर जाती थी। नरक की आग को अनन्त काल तक भुगतना। लेकिन वह आदमी जो केवल एक पाप के कारण खो गया था वह हिटलर से 5000 वर्ष अधिक जलेगा। यह कैसे न्यायसंगत हो सकता है? क्या ईश्वर इस तरह से व्यवहार करेगा? यह बाइबल के कथन का खंडन करेगा कि प्रत्येक को उसके कार्यों के अनुसार दंडित किया जायेगा।

दुष्टों की सजा के विषय में वर्तमान परिसंचरण में दो अतिवादी विचार एक सार्वभौमिकता है जो यह प्रतिपादित करती है कि ईश्वर किसी को भी खो जाने की अनुमति नहीं देते हैं। यह बहुत अच्छा है। अन्य अनन्त पीड़ा का भयानक सिद्धान्त है जो सभी अनन्त काल के दुख और पीड़ा को एक अंधेरे रसातल में नष्ट कर देगा, दोनो गलत है। सच्चाई बीच में है। परमेश्वर दुष्टो को उनके काम के अनुसार दंड देगा, लेकिन वह इस प्रक्रिया में बुराई को अमर नहीं करेगा।

मुझे वास्तव में विश्वास है कि कई ईमानदार आत्मायें अपने चरित्र को इस गलत बयानो के कारण, अपने विद्रोह के कारण ईश्वर से दूर हो गई है। वे ऐसे व्यक्ति से प्यार नहीं कर सकते हैं जो मनमाने तरीके से बुरे लोगो को बिना किसी उद्देश्य से देखेगा। कोई पुर्नवास संभव नहीं है। इस तरह के एक अकथनीय व्यवस्था के द्वारा केवल बदला लेने की प्रतिशोधी भावना से सेवा की जा सकती है। क्या ईश्वर ऐसा है?

नरक के विषय में बाइबल की सच्चाई सुनने के बाद, एक बैंक अध्यक्ष ने स्वयं को मेरे कंधो पर डाल दिया और कहा "जो, मैं फिर से आस्तिक हूँ।" वर्षों से मैं एक नास्तिक रहा हूँ क्योंकि मुझे सिखाया गया था कि ईश्वर दुष्टों को अनन्त काल तक प्रताड़ित करेंगे।

अध्याय-9

कोई पीड़ा या मृत्यु नहीं

जल्दी ही किसी दिन ईश्वर के पास एक साफ ब्रहामांड होगा। पाप के सभी प्रभाव हमेशा के लिये मिट जायेंगे। कोई पापी नहीं होगा, कोई पाप नहीं होगा और न कोई शैतान होगा, भरमाने के लिये। यह ठीक वैसे ही होगा जैसे ईश्वर ने आरम्भ में इसकी योजना बनाई थी।

यहून्ना ने इन शब्दों में भविष्य के घर का वर्णन किया, "और ईश्वर उनकी आंखो से सब आंसू पोंछ देगा और फिर

वहाँ न कोई मृत्यु, न दुख, न ही रोना होगा, पूर्व चीजें खत्म हो जायेगी"। (प्रकाशितवाक्य 21:4)

क्या आप पूरे अनमोल ब्रहामांड में किसी के भी दुख के लिये उन अनमोल शब्दों में कोई स्थान पा सकते हैं। ईश्वर ने कहा, वहाँ रोना और दर्द नहीं होगा। क्या आप उसके वचन मानते हैं या क्या आप आदमी का बड़बोलापन पर विश्वास करना चुनते हैं? इस वादे को लिखते हुये, यहून्ना ने बताया कि दुष्टों को आग की झील में कैसे डाला जायेगा। "और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा नहीं पाया गया उसे आग की झील में डाल दिया गया और मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, पहले स्वर्ग और पहली पृथ्वी खत्म हो गयी। (प्रकाशितवाक्य 20:15, 21:21)

प्रकाशितवाक्य 20:9 के अनुसार पृथ्वी पर आग की वह झील यही है। लेकिन कृपया ध्यान दे कि यह स्थान दुष्ट जलजले से गुजरेगा और ईश्वर अपने स्थान पर नई पृथ्वी का निर्माण करेगा। नया येरूशलेम पहले उतरता है और फिर आग दुष्टों को भस्म करने के लिए पृथ्वी पर बरसती है और बाद में पद 4 के अनुसार कोई दुख, दर्द, रोना या मृत्यु नहीं होगी।

कोई दुख या पीड़ा न हो, इसके लिये कोई नरक भी नहीं है। दो चीजे एक दूसरे के परस्पर अनन्य हैं। हमें हर दिन ईश्वर का शुक्रिया अदा करना चाहिये कि उसकी योजना अन्त में दुख को समाप्त कर देगी। शैतान यहाँ दर्द देने के लिए नहीं होगा और ईश्वर वादा करता है कि उसके नये राज्य में एक दर्द की छाया भी नहीं होगी।

अध्याय-10

नरक हमारे लिये नहीं बनाया गया है

अन्त में हमे आनन्दित होना चाहिये कि नरक कभी भी आपके और मेरे लिये अभिप्रेत नहीं था। यीशु ने कहा कि यह "शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिये तैयार किया गया था" (मत्ती 25:41) अगर हम उस आग में ठोकर खाते है, तो यह सबसे भारी विस्फोट होगा जिसे हम कभी भी बना सकते हैं। आपको यीशु मसीह के टूटे हुये शरीर और पिता के प्रेम, पवित्र आत्मा की विनती और एक लाख स्वर्गदूतों में सबसे अचूक सवाल यह है "अगर हम इतने बड़े उद्धार की उपेक्षा करते हैं तो हम कैसे बचेंगे?" कोई उत्तर नहीं है क्योंकि मसीह और उसके क्रूस के सिवाय कोई बच नहीं सकता है।

कोई भी पाप के कारण नहीं खोया जायेगा, क्योंकि सभी ने पाप किया है। स्वर्ग से किसी को नहीं छोड़ा जायेगा। क्योंकि उसने झूठ बोला था, चुराया था, या व्यभिचार किया था, अगर कोई व्यक्ति खो गया है वह इस कारण कि उसने स्वयं को पापों से दूर नहीं किया और यीशु की बांहो में जाने से इंकार कर दिया है, जो क्षमा करने के लिये तैयार है और अधर्म सभी को धो देता है "क्योंकि ईश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपने एकमात्र इकलौते बेटे को दे दिया, ताकि जो कोई विश्वास करे वो नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये। (यहून्ना 3:16)

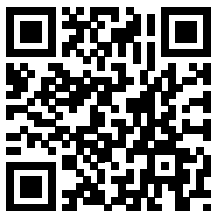


India

हमारी मुफ्त बाइबिल अध्ययन
पाठ्यक्रम को ना चूकें।

BibleStudy.AFTV.in

पर आज ही नामांकन करें!



अधिक मुफ्त डिजिटल पुस्तकें खोजें



AFTV.in/Free-Book-Library

हिन्दी, तमिल, तेलगु, कई
भाषाओं में उपलब्ध है ...



India

Post Box No. 51 • Banjara Hills
Hyderabad, TS 500034

www.AmazingFactsIndia.org